ज्ञान तत्व 178,
(क) नरेन्द्र मोदी की प्रशंसा और अडवाणी की आलोचना पर प्रश्न और मेरा उत्तर ।
(ख) चुनाव पूर्व राजनीति में अच्छे लोग लेख को नई परिस्थिति में संशोधित करना।

(क) कार्यालयीन प्रश्नो के उत्तर

प्रश्न 1. आप पहले नरेन्द्र मोदी जी की आलोचना करते थे और लालकृष्ण आडवानी जी की प्रशंसा । आपने मोदी जी को साम्प्रदायिक तक कहा था। अब ऐसा परिवर्तन का आधार क्या है ?

उत्तर . आपने मेरे उपर जो गंभीर आरोप लगाये है वे पूरी तरह या तो आपका अज्ञान है या भ्रम। या तो आपने पुराने ज्ञान तत्व पढे नही या आपको मिले नही। आपको मेरे निष्कर्षो की प्रकिया की भी जानकारी नही। मै जो भी लिखता हूँ वे सिर्फ मेरे विचार नही होते। गंभीर मुददो पर सैकडो अच्छे विद्वानों से लम्बे समय तक विचार मंथन होता है। उस मंथन से मै निष्कर्ष निकाल कर ज्ञान तत्व मे लिखता हूँ। कई बार तो कई कई वर्ष तक मंथन चलता रहता है। भारत मे तो ज्ञान तत्व के अतिरिक्त कोई ऐसी पत्रिका नही जिसमें इतनी गंभीर प्रकिया अपनाई जाती हो। यही कारण है कि ज्ञान तत्व के निष्कर्षो मे भूल होने के अवसर नगण्य ही होते है और हुए तो तुरन्त सुधारा भी जाता है क्योकि ज्ञानतत्व कोई साधारण पत्रिका तो है नही। यह तो एक सुरक्षित दस्तावेज है जिसका महत्व पारखी पाठक ज्यादा समझते है और सामान्य कम। फिर भी सामान्य लोग भी पढते पढते बहुत लाभ उठा लेते है।

नरेन्द्र मोदी और अडवाणी जी के विषय मे मेरे विचार पूर्ववत् है। मैने सात वर्ष पूर्व सम्पन्न गुजरात चुनावो के पूर्व एक लेख ज्ञानतत्व अंक उनसठ दिनांक सोलह से तीस नवंबर दो हजार दो तथा ज्ञानतत्व अंक साठ दिनांक सोलह से तीस दिसम्बर दो हजार दो को लिखे थे। पहला लेख चुनाव पूर्व और दूसरा चुनाव बाद का था। उस समय पटना मे सर्वोदय सम्मेलन हुआ था जिसमें सर्वोदय ने प्रस्ताव पारित करके गुजरात चुनावो मे प्रत्यक्ष सकिय होकर नरेन्द्र मोदी का विरोध करने की धोषणा की थी और मैने उक्त प्रस्ताव का विरोध किया था। मेरे मार्गदर्शक ठाकुरदास जी बंग भी इस प्रस्ताव के पक्ष मे थे और विरोध करने गये थे किन्तु मैने इसके बाद भी अपना विरोध व्यक्त किया। मै आज तक समझता हूँ कि मै सही था । नरेन्द्र जी मोदी ने गुजरात के मुख्य मंत्री के रूप जो किया उस कट्टर हिन्दुत्व का मै सदा विरोधी रहा हूँ। किन्तु नरेन्द्र मोदी और अशोक सिंहल तोगडिया मे बहुत फर्क है। नरेन्द्र मोदी गंभीर है और ये लोग नाटककार मनमोहन सिंह एक शालीन व्यक्ति है और मोदी स्पष्ट । दोनो के अपने अपने गुण दोष है। यदि मनमोहन सिंह जी को सोनिया जी की जगह कोई और अध्यक्ष मिलता तो दिक्कत होती । मोदी जी को दिक्कत नही होती। वे अध्यक्ष को हटाकर मनमाना अध्यक्ष भी बना लेते । इस तरह मोदी जी का न मैं विरोधी हूँ न समर्थक। उनकी कट्टरवादिता का मै विरोधी हूँ और उनमे प्रधान मंत्रित्व के सभी गुण देखता हूँ।

आडवाणी जी के विषय मे भी आपको ज्ञानतत्व एक सौ सताइस का लेख पढना चाहिये था। उसमें मैने बिल्कुल स्पष्ट लिखा है कि आडवानी जी पद मोह के कारण राजनैतिक अवसाद की दिशा मे जा रहे है । मेरा अब भी वही मानना है। यदि अडवानी जी नेता पद को अमानत न समझ कर अधिकार मानते है और उस पद से मोह ग्रस्त है तो ऐसी पार्टी को और ज्यादा नुकसान उठाना चाहिये था। आप सबको याद दिलाने के लिये मै तीनो लेख फिर भेज रहा हूँ जिससे आप समझ सके कि ज्ञान तत्व मे प्रकाशित विचार कितने गंभीर और महत्वपूर्ण होते है। मैं आपको पुनः बता हूँ कि यदि कही भूल होगी तो तत्काल सुधारने का प्रयास किया जायगा जैसा कि इस अंक मे किया भी गया है। किन्तु भूल होने की संभावना नगण्य ही होती है क्योकि बहुत विचार मंथन के बाद ही ज्ञानतत्व मे लिखना पडता है जिसका बहुत ध्यान रखा जाता है।

यदि वर्तमान चुनावो से जोडकर समीक्षा करे तो मैने उस समय लिखा था कि कांग्रेस मनमोहनसिह जी के नेतृत्व मे वामपंथियो से छुटकारा पा ले और भाजपा नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व मे संघ की कार्य प्रणाली से दूर हो जावे। यदि आवश्यक हो तो भाजपा और कांग्रेस मिलकर सरकार चलावें । प्रसिध्द राजनैतिक विचारक गोविन्दाचार्य जी ने मतगणना के पूर्व त्रिशंकु संसद की संभावना देखकर ऐसी ही सलाह दी थी। अन्य कुछ विद्वानो ने भी इस बात का समर्थन किया था । परिस्थितियो ने सब कुछ ठीक कर दिया। कांग्रेस पार्टी को वामपंथ से अलग कर दिया। कांग्रेस भाजपा को मिलकर सरकार चलाने से भी अधिक अच्छा विकल्प दे दिया कि वे सरकार मे साथ न चलकर पूरी पूरी व्यवस्था ही साथ मिलकर चलावे जिसमे एक सरकार और एक विपक्ष मे हो। भाजपा को समझने की जरूरत है । भाजपा को चाहिये कि वह संघ की कट्टर हिन्दुत्व की लाइन छोड दे, नरेन्द्र मोदी को अपना नेता चुने, अन्य सहयोगी दलो से स्वतंत्र हो जावे तथा सरकार विरोधी की जगह विपक्ष की भूमिका शुरू करे। अर्थनीति मे भाजपा और काग्रेस के बीच कोई भेद नही । सिर्फ कट्टर हिन्दुत्व या नरम हिन्दुत्व का भेद है। हम हिन्दु सारी दुनिया को हिन्दु बनाना नही चाहते । हम तो सारी दुनिया को अपने झन्डे तले लाने की इच्छा रखने वाले मुसलमानो इसाइयो से पूरी दुनिया को स्वतंत्र कराना चाहते है। चाहे ऐसे स्वतंत्र लोग मुसलमान या इसाई ही क्यो न रहे। या तो संघ बदले, या भाजपा संघ की गुलामी से मुक्त हो। मेरी तो यही इच्छा है और भारतीय मतदाता ने बहुत सूझबूझ के साथ परिणाम दिया है । किन्तु अब भी आप अपनी पुरानी भूल अडवाणी संघ कट्टर हिन्दुत्व का रिजेक्टेड माल ही अपनी दुकान पर बेचते रहे तथा विपक्ष के स्थान पर विरोधी की ही भूमिका अपनाते रहे तो शेष बचे ग्राहक भी यदि नई दुकान की तलाश करने लगें तो दोष आपका ही होगा ग्राहक का नही।

नोटः—तीनो लेख ज्ञानतत्व मे पहले छप चुके है। पहला लेख ज्ञानतत्व अंक उनसठ का है । दूसरा अंक साठ का तथा तीसरा अंक एक सो सताइस का।

(ख) अपनो से अपनी बात

चुनाव से पूर्व ज्ञानतत्व अंक एक सौ छिहत्तर सोलह से इकतीस मई दो हजार नौ मे मैने '' राजनीति मे अच्छे लोग'' शीर्षक एक लेख लिखा था। लेख चुनाव परिणाम आने के एक सप्ताह पूर्व लिखा गया था। लेख का निष्कर्ष यह था कि

1. राजनीति मे अच्छे लोग शब्द की परिभाषा भी लगातार बदलती बदलती सबसे निचले स्तर पर चली गई है।
2. निचले स्तर वाली परिभाषा के आधार पर भी बुरे लोगों की संख्या लगाकर बढती ही जा रही है। भविष्य मे भी इस दिशा को बदलने की दूर दूर तक सभावना नही है
3. राजनीति को सुधारने का प्रयत्न हानिकारक है। राजनेता गिने चुने अच्छे लोगो का ढाल के रूप मे उपयोग करते है।

इसलिये वर्तमान राजनैतिक प्रकिया से अच्छे लोगों को बाहर हो जाना चाहिये और एक ऐसी वैकल्पिक सामाजिक व्यवस्था खडी करनी चाहिये जो वर्तमान लोकतंत्र को लोग स्वराज्य मे बदल सके।

मैने यह भी लिखा था कि राजनीति विहीन समाज व्यवस्था संभव नही जिस तरह शरीर मे शौच इन्द्रिय गन्दी होते हुए भी अनिवार्य है उसीतरह समाज भी एक शरीर है और राजनीति आवश्यक है किन्तु उस विषय पर सीमित समय ही लगाना चाहिये।

लेख लिखने का मेरा आशय यह था कि वर्तमान राजनैतिक दलों से अब किसी प्रकार की आशा व्यर्थ है। वर्तमान दलो मे जो थोडे से अच्छे लोग बचे है वे राजनीतिक दलो से बाहर आकर नई राजनैतिक व्यवस्था बनाने मे सकिय हो जावे। समाज को भी चाहिये कि वह वर्तमान राजनैतिक प्रणाली से निराश होकर इस प्रणाली का विकल्प खोजे।

पंद्रह दिन बाद ही चुनाव परिणाम आ गये। परिणामो ने सारी परिस्थितियॉ बदल दी। राजनीति मे सभी अच्छे लोग मजबूत हुए। राजनीति का स्तर सुधारने की एक उम्मीद जगी। स्वतंत्रता के बाद पहली बार दिशा बदली है। बदलाव कितना टिकेगा या परिणाम क्या होगा यह कहना अभी संभव नही किन्तु सम्पूर्ण निराशा के वातावरण मे कुछ परिवर्तन की आशा तो दिखने ही लगी है। इसलिये आवश्यकता यह है कि मै नयी परिस्थिति अनुसार अपने उक्त निष्कर्षो को वापस ले लूॅ और उन्हे संशोधित करूॅ।

वर्तमान लोकतंत्र असफल हो चुका है और उसका एकमात्र विकल्प लोकस्वराज्य ही है। इस निष्कर्ष मे कोई फेर बदल नही है। संशोधन सिर्फ यही है कि लोक स्वराज्य के लिये वर्तमान राजनैतिक दलों पर भी दबाव बनाया जाय और सम्पर्क भी रखा जाय। पूरी तरह निराश होकर वर्ममान प्रणाली को शत्रुवत मानना ठीक नही । अभी और प्रतीक्षा करनी चाहिये। क्याकि निष्कर्ष निकालने की छ स्थितियॉ होती है। 1 सहयोग 2 समर्थन 3 समीक्षा 4 आलोचना 5 विरोध 6 संघर्ष। सहयोग सबसे अच्छी स्थिति मानी जाती है और संघर्ष अन्तिम। मेरे उक्त लेख का आशय यह था कि अब संघर्ष धोषित कर दिया जाय किन्तु नई बदली स्थिति मे हमारी रणनीति बदलनी चाहिये और हम लोकतंत्र की आलोचना और विरोध तक ही सीमित रहें। संघर्ष नही।

इसलिये वर्ममान बदले हुए वातावरण मे मै अपना उक्त लेख वापस लेता हूॅ और अपने साथियो को सलाह देता हूॅ किवे नये राजनैतिक धटना कम के आधार पर प्रतीक्षा करे । यदि नये परिवर्तन के आधार पर राजनेताओ ने लोक स्वराज्य की दिशा समझी तो व्यवस्था परिवर्तन हमारे लिये आसान हो सकता है और यदि उन्होने लोकतंत्र को ही मजबूत करने का प्रयास किया तो हमारी लइाईज्यादा कठिन हो सकती है क्योकि बुरे मालिक से लडना उतना कठिन नही जितना अच्छे मालिक से। नयी परिस्थितियो मे बुरे मालिक के स्थान पर अच्छे मालिक मजबूत हो रहे है जो हमारे लिये सुविधा जनक भी हो सकते है और धातक भी।